भाया जीणो जग में दो दिन .....

भाया जीणो जग में दो दिन, प्रेम बढ़ावणो रे ।
बहना जीणो जग में दो दिन, प्रेम बढ़ावणो रे ।

क का काम क्रोध को तज दो, ख खा खाना गम का खाओ,
ग गा गरीब को ना सताओ, घ घा घर आये मेहमान का मान बढ़ावणो रे ।
च चा चर्चा ईश्वर की करना, छ छा छोड़ो झूठी आशा,
ज जा जग है स्वार्थी सारा, झ झा झगड़ा–रगड़ा छोड़ ने प्रभु गुण गावणों रे ।
ट टा टेम रहे प्रभु भजलो, ठ ठा ठकुराई को तज दो,
ड डा डरते ईश्वर से रहणों, ढ ढा ढकनों दोष परायो अवगुण नहीं देखणों रे ।
त ता तेरी–मेरी छोड़ो, थ था थोड़ो जग में जीणो,
द दा दया धर्म मन लाओ, ध धा धन रो नहीं अभिमान के मन में लावणों रे ।
न ना नार पराई ना तकना, प पा पर धन कभी नहीं हरना,
फ फा फरजी साख नहीं भरना, ब बा बचन देय नहीं नटणो बचन निभावणो रे ।
भ भा भाग भरोसो राखो, म मा मोह माया को त्यागो,
य या यश जो जग में कमाणो, र रा रहो गुरु सेवा में प्रभु ने जो पावणों रे ।
ल ला लोभ को दिल से निकालो, व वा वश में जबान को राखो,
स सा सत्–संगत में मन लाओ, ह हा हरि कहे प्रभु गुण ने प्रेम सूं गावणों रे ।

दान करो दिल खोलकर, मत जा होय अधीर ।
धर्म किये धन ना घटे, कह गये दास कबीर ।।